बी.ए B.A गृह विज्ञान /Home Science

सेमेस्टर 6 /Semester-6

MJC-(10) NON FORMAL,ADULT AND LIFELONG EDUCATION

NAME: DR. SAFINA KAUSAR

B.ed, M.A (Home science), Ph.D

Assistant Professor of Home Science (Dept. of Home Science), Al- Hafeez College, Recognised Minority Degree College of V.K.S.U., Alimabad Murshidpur Old Police Line Arrah, Bihar.

Email: Skausar090@gmail.com. blsforautism@gmail.com

• Tipic Coverd	(Theory:Credits-4)	No of Lecture-8	Marks 100
Non Formal Education (NFE).			
इकाई 1: Difference Between Formal & Non formal Education.			
इकाई 2: Significance and Scope of Non Formal Education.			
इकाई 3: New Education Policy & (NFE) in India.			

इकाई 1: Difference Between Formal & Non formal Education. औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा के बीच अंतर।

फॉर्मल एजुकेशन (औपचारिक शिक्षा)

इसे आप "स्कूली शिक्षा प्रणाली" के नाम से जानते हैं।

- **यह क्या है?**

यह एक बहुत ही **संगठित और ढाँचे में बंधी** हुई शिक्षा है। यह स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालयों में दी जाती है।

- **मुख्य विशेषताएँ:**

- **सीढ़ीदार प्रणाली:** इसमें एक निश्चित सीढ़ी होती है। पहले प्राइमरी स्कूल, फिर हाई स्कूल, फिर कॉलेज। एक कक्षा पास किए बिना अगली कक्षा में नहीं जा सकते।
- **निश्चित पाठ्यक्रम:** यह तय होता है कि क्या पढ़ना है। सरकार या बोर्ड द्वारा बनाए गए पाठ्यक्रम (सिलेबस) को ही पढ़ना होता है।

- **प्रमाण पत्र (सर्टिफिकेट) जरूरी:** पढ़ाई पूरी होने पर आपको डिग्री या सर्टिफिकेट (जैसे हाई स्कूल का मार्कशीट, बी.ए. की डिग्री) मिलती है। नौकरी के लिए यह जरूरी होता है।
- **उम्र तय होती है:** आमतौर पर यह बच्चों और युवाओं के लिए होती है (जैसे 6 साल के बच्चे का स्कूल में दाखिला)।

आसान उदाहरण: एक बच्चा पहली कक्षा में दाखिला लेता है, फिर 12वीं पास करता है, और फिर बी.ए. करने कॉलेज जाता है। यह पूरी प्रक्रिया **फॉर्मल एजुकेशन** है।

2. नॉन-फॉर्मल एजुकेशन (अनौपचारिक शिक्षा): गृह विज्ञान के नजरिए से यह बहुत महत्वपूर्ण है। इसे "औपचारिक स्कूल प्रणाली के बाहर संगठित शिक्षा" समझिए।

- **यह क्या है?**

यह एक **व्यवस्थित लेकिन लचीली** शिक्षा है। यह उन लोगों तक पहुँचने के लिए है जो स्कूल नहीं जा पाए, या जो नई स्किल (कौशल) सीखना चाहते हैं।

- **मुख्य विशेषताएँ:**
- **लचीलापन (Flexibility):** इसमें उम्र की कोई बंदिश नहीं है। कोई भी किसी भी उम्र में सीख सकता है। कक्षाओं का समय भी लचीला होता है (सुबह या शाम को)।
- **जरूरत के हिसाब से:** यह पढ़ाई किताबी कीड़ा बनाने के लिए नहीं, बल्कि जीवन में काम आने वाले हुनर (जैसे सिलाई, बचत करना, पोषण) सिखाने के लिए होती है।
- **सर्टिफिकेट जरूरी नहीं:** इसमें सीखना मुख्य उद्देश्य होता है, डिग्री लेना गौण उद्देश्य होता है।
- **लक्ष्य:** यह आत्मनिर्भरता और जीवन स्तर सुधारने पर केंद्रित होती है।

गृह विज्ञान से जुड़े आसान उदाहरण

1. **महिलाओं के लिए सिलाई केंद्र:** गाँव की महिलाएँ जो स्कूल नहीं गईं, वे किसी आंगनवाड़ी या समुदायिक केंद्र में 3 महीने का सिलाई कोर्स करती हैं। यह **नॉन-फॉर्मल एजुकेशन** है।
2. **पोषण जागरूकता शिविर:** आप (एक गृह विज्ञान के छात्र) के तौर पर गाँव में जाकर गर्भवती महिलाओं को संतुलित आहार के बारे में बताते हैं। यह एक आयोजित शिक्षा है, लेकिन स्कूल में नहीं हो रही, इसलिए यह **नॉन-फॉर्मल** है।

3. **व्यावसायिक प्रशिक्षण:** कुछ बेरोजगार युवाओं को मोबाइल रिपेयर करना या ब्यूटी पार्लर का काम सिखाया जाना।

गृह विज्ञान के नजरिए से मुख्य अंतर (Difference)

विशेषता	फॉर्मल एजुकेशन (औपचारिक)	नॉन-फॉर्मल एजुकेशन (अनौपचारिक)
स्थान	स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय	मोहल्ले का कम्युनिटी हॉल, आंगनवाड़ी, घर, पार्क
उम्र	मुख्यतः बच्चे और युवा (निश्चित आयु वर्ग)	**सभी उम्र के लोग** (बच्चे, युवा, बुजुर्ग, गृहिणियाँ)
लक्ष्य	डिग्री प्राप्त करना, नौकरी पाना	जीवन कौशल (Life Skills) सीखना, आत्मनिर्भर बनना
समय	फिक्स (सुबह 10 से 4 बजे तक)	लचीला (सुविधानुसार शाम या सुबह)
गृह विज्ञान से लिंक	बी.ए. की डिग्री के लिए पढ़ाई करना	गाँव की महिलाओं को बचत समूह (SHG) बनाना सिखाना

एडल्ट एजुकेशन (वयस्क शिक्षा) और लाइफ लॉन्ग एजुकेशन (आजीवन शिक्षा) से कनेक्शन

- **नॉन-फॉर्मल एजुकेशन, एडल्ट एजुकेशन** (वयस्क शिक्षा) का सबसे बड़ा माध्यम है। जो वयस्क (18+ के लोग) स्कूल नहीं जा सके, उन्हें पढ़ाना या सिखाना "एडल्ट एजुकेशन" कहलाता है, और यह आमतौर पर नॉन-फॉर्मल तरीके से ही होता है।
- **लाइफ लॉन्ग एजुकेशन** (आजीवन शिक्षा) का मतलब है कि इंसान जीवन भर सीखता रहता है। **नॉन-फॉर्मल एजुकेशन** इस आजीवन सीखने की प्रक्रिया को पूरा करने का सबसे अच्छा जरिया है। जैसे आपकी दादी ने अपने जीवन में बुट्टीदार पकौड़े बनाना सीखा (नॉन-फॉर्मल) - यही लाइफ लॉन्ग एजुकेशन है।

प्रश्न 1: फॉर्मल और नॉन-फॉर्मल एजुकेशन क्या है?

उत्तर: फॉर्मल एजुकेशन उस शिक्षा को कहते हैं जो एक नियमित और संगठित ढांचे के तहत दी जाती है। यह स्कूल, कॉलेज या विश्वविद्यालयों में होती है, जहाँ एक निश्चित पाठ्यक्रम होता है और उम्र के हिसाब से कक्षाएं विभाजित होती हैं। इसमें एक सीढ़ीबद्ध प्रणाली होती है, जैसे पहले प्राइमरी फिर हाईस्कूल और उसके बाद कॉलेज। पढ़ाई पूरी करने पर छात्रों को डिग्री या प्रमाण पत्र दिया जाता है, जो आगे की पढ़ाई और नौकरी के लिए जरूरी होता है। उदाहरण के लिए, एक बच्चे का पहली कक्षा में दाखिला लेना और फिर बारहवीं पास करके कॉलेज जाना फॉर्मल एजुकेशन के अंतर्गत आता है।

नॉन-फॉर्मल एजुकेशन उस शिक्षा को कहते हैं जो स्कूली प्रणाली के बाहर तो होती है, लेकिन फिर भी एक व्यवस्थित तरीके से आयोजित की जाती है। यह शिक्षा बहुत लचीली होती है, जिसमें उम्र की कोई बंदिश नहीं होती और समय भी सुविधानुसार रखा जा सकता है। इसमें मुख्य उद्देश्य डिग्री हासिल करना न होकर, लोगों को जीवन में काम आने वाले व्यावहारिक कौशल सिखाना होता है। उदाहरण के लिए, महिलाओं के लिए लगाया गया सिलाई प्रशिक्षण केंद्र, शाम को चलने वाली वयस्क साक्षरता कक्षाएं, या फिर युवाओं को मोबाइल रिपेयर करना सिखाना नॉन-फॉर्मल एजुकेशन के उदाहरण हैं। इसमें प्रमाण पत्र मिलना जरूरी नहीं, बल्कि सीखना अधिक महत्वपूर्ण होता है।

प्रश्न 2: फॉर्मल और नॉन फॉर्मल एजुकेशन की विशेषताएं बताएं?

उत्तर: फॉर्मल एजुकेशन (औपचारिक शिक्षा) की विशेषताएं

फॉर्मल एजुकेशन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह पूरी तरह से नियोजित और संगठित होती है। यह एक निश्चित समय-सारणी और पाठ्यक्रम के अनुसार चलती है, जिसे स्कूल, कॉलेज या विश्वविद्यालय जैसे मान्यता प्राप्त संस्थान संचालित करते हैं। इसमें उम्र और कक्षा के हिसाब से एक सीढ़ीबद्ध प्रणाली होती है, यानी पहले प्राइमरी, फिर हाईस्कूल और उसके बाद कॉलेज की पढ़ाई होती है, और एक कक्षा पास किए बिना अगली कक्षा में नहीं जा सकते। इस शिक्षा में शिक्षक प्रशिक्षित और योग्य होते हैं और पढ़ाई पूरी होने पर छात्रों को डिग्री या प्रमाण पत्र दिया जाता है, जो आगे की पढ़ाई और नौकरी के लिए बहुत जरूरी होता है। इसमें मूल्यांकन के लिए परीक्षाएं ली जाती हैं और यह शिक्षा आमतौर पर सरकार या शिक्षा बोर्ड के नियमों द्वारा संचालित होती है।

नॉन-फॉर्मल एजुकेशन (अनौपचारिक शिक्षा) की विशेषताएं

नॉन-फॉर्मल एजुकेशन की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इसका लचीलापन है। यह शिक्षा स्कूली प्रणाली के बाहर तो होती है, लेकिन फिर भी एक उद्देश्य के साथ व्यवस्थित रूप से आयोजित की जाती है। इसमें उम्र की कोई बंदिश नहीं होती, कोई भी व्यक्ति किसी भी उम्र में इसमें भाग ले सकता है। इसका समय और स्थान भी लचीला होता है, जैसे कक्षाएं शाम को या सुविधानुसार कहीं भी लगाई जा सकती हैं। इसका पाठ्यक्रम जरूरत के हिसाब से बनाया जाता है, यानी लोगों को जीवन में जिस चीज की जरूरत होती है, वही सिखाया जाता है, जैसे सिलाई, बुनाई, कंप्यूटर या खेती के नए तरीके। इसमें डिग्री या प्रमाण पत्र से ज्यादा जरूरी होता है सीखना और व्यावहारिक ज्ञान हासिल करना, ताकि लोग आत्मनिर्भर बन सकें और अपने जीवन स्तर को सुधार सकें।

इकाई 2: Significance and Scope of Non Formal Education. गैर औपचारिक शिक्षा का महत्व और दायरा।

परिचय (Introduction)

शिक्षा मनुष्य के जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा है। यह न केवल हमें ज्ञान देती है, बल्कि हमारे व्यक्तित्व का विकास करती है, हमें सही और गलत की पहचान कराती है और समाज में एक जिम्मेदार नागरिक की तरह जीना सिखाती है। आमतौर पर जब हम शिक्षा की बात करते हैं तो हमारे दिमाग में स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालयों की तस्वीर उभरती है। इस पारंपरिक और संगठित स्वरूप को औपचारिक शिक्षा (Formal Education) कहा जाता है। लेकिन क्या केवल यही एक रास्ता है जिससे हम सीख सकते हैं? क्या वे लाखों लोग जो किसी कारणवश स्कूल नहीं जा पाए या जो जीवन भर कुछ नया सीखना चाहते हैं, वे शिक्षा के दायरे से बाहर हैं? इन्हीं प्रश्नों का उत्तर हमें गैर-औपचारिक शिक्षा (Non-formal Education) में मिलता है। गैर-औपचारिक शिक्षा को हम सरल शब्दों में "औपचारिक स्कूली प्रणाली के बाहर संगठित शैक्षिक गतिविधि" के रूप में समझ सकते हैं। यह शिक्षा का वह स्वरूप है जो लचीला है, व्यवस्थित है, और जानबूझकर की जाती है, लेकिन यह औपचारिक शिक्षा की तरह कठोर नियमों और सीढ़ीदार ढांचे में बंधी नहीं होती। इसका मुख्य उद्देश्य उन लोगों तक शिक्षा पहुंचाना है जो गरीबी, पारिवारिक जिम्मेदारियों, सामाजिक बंधनों, या अन्य कारणों से औपचारिक शिक्षा प्रणाली का लाभ नहीं उठा सके। इसमें वे बच्चे शामिल हैं जो मजदूरी करते हैं, वे महिलाएं शामिल हैं जो घर की देखभाल करती हैं, वे युवा शामिल हैं जो रोजगार के लिए कोई हुनर सीखना चाहते हैं, और वे बुजुर्ग शामिल हैं जो आजीवन सीखने की चाह रखते हैं।

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में गैर-औपचारिक शिक्षा का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है। भारत की अधिकांश आबादी गांवों में रहती है और एक बड़ा वर्ग ऐसा है जो अभी भी निरक्षर है या बुनियादी शिक्षा से वंचित है। केवल औपचारिक शिक्षा के माध्यम से इतने बड़े और विविध समूह तक पहुंचना संभव नहीं है। यहीं पर गैर-औपचारिक शिक्षा एक पुल (bridge) का काम करती है। यह शिक्षा को घर-घर तक पहुंचाने, उन्हें उनकी जरूरत के अनुसार व्यावहारिक ज्ञान देने और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने का सशक्त माध्यम है। यह महिला सशक्तिकरण, वयस्क साक्षरता, कौशल विकास और सामाजिक न्याय जैसे महत्वपूर्ण उद्देश्यों को पूरा करने में मदद करती है।

गैर-औपचारिक शिक्षा का दायरा (Scope) भी बहुत व्यापक है। यह केवल साक्षरता अभियान तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें व्यावसायिक प्रशिक्षण (जैसे सिलाई, बढ़ईगीरी, मोबाइल रिपेयरिंग), स्वास्थ्य और पोषण शिक्षा, कानूनी साक्षरता, पर्यावरण जागरूकता, कंप्यूटर शिक्षा, और जीवन कौशल (life skills) प्रशिक्षण जैसे

असंख्य विषय शामिल हैं। इसके कार्यक्रम सामुदायिक केंद्रों, आंगनवाड़ियों, ग्राम पंचायत भवनों, यहां तक कि खुले मैदानों या वृक्षों के नीचे भी चलाए जा सकते हैं। समय और उम्र की कोई बंदिश न होने के कारण यह शिक्षा बच्चों, युवाओं, वयस्कों और बुजुर्गों सभी के लिए उपलब्ध है।

नई शिक्षा नीति 2020 ने भी गैर-औपचारिक शिक्षा के इसी महत्व और व्यापक दायरे को रेखांकित किया है। नीति में स्कूल से बाहर के बच्चों को मुख्यधारा में लाने, वयस्कों के लिए साक्षरता और कौशल विकास कार्यक्रम चलाने, और खुले स्कूल (NIOS) जैसे माध्यमों को मजबूत बनाने पर बल दिया गया है। यह स्पष्ट करता है कि भविष्य में गैर-औपचारिक शिक्षा की भूमिका और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाएगी।

गैर-औपचारिक शिक्षा केवल औपचारिक शिक्षा का एक विकल्प या उसका पूरक ही नहीं है, बल्कि एक समावेशी और न्यायपूर्ण समाज के निर्माण की आधारशिला है। यह उन करोड़ों वंचितों को आवाज देती है, उन्हें सशक्त बनाती है, और आजीवन सीखने की भावना को प्रोत्साहित करती है। इस प्रकार, गैर-औपचारिक शिक्षा का महत्व और दायरा दोनों ही मानव विकास और राष्ट्र निर्माण की दृष्टि से अत्यंत व्यापक और गहरे हैं।

प्रश्न 1: फॉर्मल और नॉन फॉर्मल एजुकेशन का महत्व बताएं ?

उत्तर: फॉर्मल एजुकेशन (औपचारिक शिक्षा) का महत्व

फॉर्मल एजुकेशन का सबसे बड़ा महत्व यह है कि यह व्यक्ति को एक मजबूत नींव और योग्यता प्रदान करती है, जो जीवन भर काम आती है। यह शिक्षा व्यक्ति को डिग्री और प्रमाण पत्र दिलाती है, जो आज के समय में अच्छी नौकरी पाने और करियर बनाने के लिए सबसे जरूरी मानी जाती है। इसके माध्यम से बच्चों और युवाओं का सर्वांगीण विकास होता है, उन्हें अनुशासन सिखाया जाता है और समाज में चल रही व्यवस्थाओं की जानकारी दी जाती है। फॉर्मल एजुकेशन न केवल किताबी ज्ञान देती है, बल्कि यह व्यक्ति के व्यक्तित्व को निखारती है, उसमें आत्मविश्वास पैदा करती है और उसे एक जिम्मेदार नागरिक बनने में मदद करती है। यह देश के विकास के लिए भी बहुत जरूरी है, क्योंकि पढ़े-लिखे लोग ही डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक और शिक्षक बनकर समाज और देश की तरक्की में योगदान देते हैं।

नॉन-फॉर्मल एजुकेशन (अनौपचारिक शिक्षा) का महत्व

नॉन-फॉर्मल एजुकेशन का सबसे बड़ा महत्व यह है कि यह उन लाखों लोगों तक शिक्षा पहुंचाती है, जो किसी कारणवश स्कूल नहीं जा पाए या औपचारिक शिक्षा से वंचित रह गए। यह शिक्षा लोगों को व्यावहारिक और रोजगारोन्मुखी कौशल (जैसे सिलाई, बुनाई, मोबाइल रिपेयरिंग, कंप्यूटर) सिखाकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाती है, जिससे वे अपना और अपने परिवार का जीवन स्तर सुधार सकते हैं। यह वयस्क शिक्षा और

महिला सशक्तिकरण का सबसे कारगर माध्यम है, क्योंकि यह उन्हें घर बैठे या उनकी सुविधा के समय पर शिक्षित और जागरूक बनाने में मदद करता है। नॉन-फॉर्मल एजुकेशन लोगों को स्वास्थ्य, पोषण, स्वच्छता और उनके अधिकारों के प्रति जागरूक बनाकर एक स्वस्थ और जागरूक समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह आजीवन सीखने (लाइफ लॉन्ग लर्निंग) की भावना को बढ़ावा देती है और व्यक्ति को बदलते समय के साथ चलने योग्य बनाती है।

प्रश्न 5: अनौपचारिकेतर शिक्षा का भारत में क्या महत्व है?

उत्तर: भारत में अनौपचारिक शिक्षा (नॉन-फॉर्मल एजुकेशन) का महत्व बहुत अधिक है, खासकर उन लाखों लोगों के लिए जो किसी कारण औपचारिक शिक्षा की मुख्य धारा से नहीं जुड़ पाए हैं। इसका सबसे बड़ा महत्व यह है कि यह शिक्षा के अधिकार को सार्थक बनाती है और 'सबको शिक्षा' के लक्ष्य को पूरा करने में मदद करती है। यह उन बच्चों, वयस्कों, महिलाओं, अनुसूचित जाति और जनजाति के लोगों और कामकाजी बच्चों तक शिक्षा पहुंचाने का सबसे कारगर माध्यम है, जो स्कूल नहीं जा पाते या बीच में ही पढ़ाई छोड़ चुके हैं। अनौपचारिक शिक्षा का महत्व इस बात में भी है कि यह लचीली और जरूरत के हिसाब से होती है। यह लोगों को उनके जीवन से जुड़े व्यावहारिक कौशल (जैसे हुनर सीखना, रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण) प्रदान करती है, जिससे वे आत्मनिर्भर बन सकें और अपनी आय बढ़ा सकें। यह मानव संसाधन विकास में भी अहम भूमिका निभाती है, क्योंकि यह लोगों को सशक्त बनाकर देश के विकास में योगदान देने योग्य बनाती है। इसके अलावा, यह वयस्क साक्षरता कार्यक्रमों, सतत शिक्षा और दूरस्थ शिक्षा के जरिए लोगों को जीवन भर सीखने (लाइफ लॉन्ग लर्निंग) का अवसर देती है, जिससे वे न केवल पढ़ना-लिखना सीखते हैं बल्कि स्वास्थ्य, पोषण और अपने अधिकारों के प्रति भी जागरूक बनते हैं।

इकाई 3: New Education Policy & (NFE) in India. भारत में नई शिक्षा नीति और (एनएफई)।

परिचय (Introduction)

इक्कीसवीं सदी का दूसरा दशक भारत के शिक्षा क्षेत्र के लिए एक ऐतिहासिक मोड़ लेकर आया, जब जुलाई 2020 में केन्द्रीय मंत्रिमंडल द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एनईपी 2020) को मंजूरी प्रदान की गई। यह नीति 34 वर्ष पुरानी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 का स्थान लेती है और 21वीं सदी की यह पहली शिक्षा नीति है, जिसे भारत को एक जीवंत ज्ञान समाज और वैश्विक ज्ञान महाशक्ति के रूप में स्थापित करने के दृष्टिकोण से तैयार किया गया है। एनईपी 2020 केवल औपचारिक शिक्षा (फॉर्मल एजुकेशन) के ढांचे में सुधार तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उन लाखों बच्चों, युवाओं और वयस्कों तक शिक्षा की रोशनी पहुंचाने का एक सशक्त माध्यम भी है, जो किसी न किसी कारणवश शिक्षा की मुख्यधारा से दूर रह गए हैं। यहीं

पर गैर-औपचारिक शिक्षा (नॉन-फॉर्मल एजुकेशन) की अवधारणा इस नई नीति के केन्द्र में आती है और इसे एक अभूतपूर्व महत्व प्रदान करती है।

एनईपी 2020 का मूल दर्शन 'पहुंच, समानता, गुणवत्ता, सामर्थ्य और जवाबदेही' के स्तंभों पर टिका है। यह नीति स्पष्ट रूप से स्वीकार करती है कि केवल औपचारिक शिक्षा के माध्यम से देश के हर बच्चे तक पहुंचना और उन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना एक जटिल चुनौती है। यही कारण है कि नीति में "औपचारिक और गैर-औपचारिक शिक्षा के माध्यमों को शामिल करते हुए सीखने के बहुविध मार्ग" उपलब्ध कराने पर विशेष बल दिया गया है। इस प्रावधान के पीछे सरकार का स्पष्ट लक्ष्य उन लगभग 2 करोड़ बच्चों को मुख्यधारा में वापस लाना है जो विभिन्न सामाजिक-आर्थिक कारणों से स्कूल से बाहर हैं। यह आंकड़ा अकेले ही इस बात को रेखांकित करने के लिए पर्याप्त है कि गैर-औपचारिक शिक्षा की अवधारणा अब केवल एक वैकल्पिक व्यवस्था नहीं रह गई है, बल्कि यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति के मूल एजेंडे का एक अनिवार्य अंग बन गई है।

गैर-औपचारिक शिक्षा के प्रति यह प्रतिबद्धता एनईपी 2020 के कई प्रावधानों में स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। सबसे पहले, नीति में 'ड्रॉपआउट' बच्चों को वापस लाने के लिए नवाचारी शिक्षा केंद्र (इनोवेटिव एजुकेशन सेंटर) स्थापित करने की बात कही गई है। ये केंद्र औपचारिक स्कूलों की तरह कठोर नियमों से न बंधे हुए, लचीले समय और लचीले पाठ्यक्रम के साथ उन बच्चों को बुनियादी शिक्षा और कौशल प्रदान करेंगे, जो मजदूरी करते हैं या जिनकी पारिवारिक परिस्थितियाँ उन्हें नियमित स्कूल जाने से रोकती हैं। दूसरे, नीति में कक्षा 3, 5 और 8 के लिए खुले स्कूल (ओपन स्कूलिंग) के माध्यम से शिक्षा की व्यवस्था पर जोर दिया गया है, जो राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान (एनआईओएस) और राज्य स्तर पर संचालित स्टेट ओपन स्कूलों के जरिए संभव होगी। इसके अतिरिक्त, कक्षा 10 और 12 के समकक्ष शिक्षा कार्यक्रम, व्यावसायिक पाठ्यक्रम, वयस्क साक्षरता कार्यक्रम और जीवन संवर्धन कार्यक्रमों का संचालन भी गैर-औपचारिक शिक्षा के व्यापक दायरे को ही दर्शाता है।

इस प्रकार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 गैर-औपचारिक शिक्षा को एक ऐसे शक्तिशाली उपकरण के रूप में देखती है जो सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित समूहों (एसईडीजी) तक शिक्षा पहुंचाने, लैंगिक असमानता को दूर करने और विकलांग बच्चों को मुख्यधारा से जोड़ने में सहायक हो सकता है . नीति में प्रस्तावित जेंडर इनक्लूजन फंड और स्पेशल एजुकेशन जोन्स की अवधारणा भी इसी दिशा में उठाए गए महत्वपूर्ण कदम हैं। यह नीति मानती है कि एक समावेशी और न्यायपूर्ण समाज के निर्माण के लिए शिक्षा के औपचारिक और गैर-औपचारिक दोनों स्वरूपों का समन्वय आवश्यक है। यह परिचय एनईपी 2020 के इसी दृष्टिकोण को रेखांकित करता है, जहाँ गैर-औपचारिक शिक्षा को केवल एक पूरक व्यवस्था न मानकर, शिक्षा के सार्वभौमिकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में एक रणनीतिक साझेदार के रूप में स्थापित किया

गया है। आगामी अनुच्छेदों में हम इस नीति के विभिन्न प्रावधानों, उनके क्रियान्वयन की चुनौतियों और भारत में गैर-औपचारिक शिक्षा के भविष्य पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

प्रश्न 1: नई शिक्षा नीति पॉलिसी अनौपचारिकेतर शिक्षा के बारे में क्या बताती है?

उत्तर: नई शिक्षा नीति (NEP 2020) में अनौपचारिक शिक्षा (नॉन-फॉर्मल एजुकेशन) को बहुत अहमियत दी गई है। इस नीति का मुख्य लक्ष्य हर उस बच्चे और वयस्क तक शिक्षा पहुंचाना है, जो किसी कारण स्कूल नहीं जा पाता या पढ़ाई छोड़ चुका है। नीति साफ तौर पर कहती है कि पढ़ाई के लिए सिर्फ औपचारिक (फॉर्मल) रास्ता ही नहीं, बल्कि अनौपचारिक (नॉन-फॉर्मल) रास्ते भी उतने ही जरूरी हैं। इसका सबसे बड़ा उद्देश्य देश के लगभग 2 करोड़ उन बच्चों को फिर से मुख्य धारा से जोड़ना है जो स्कूल से बाहर हैं। इसे साकार करने के लिए NEP 2020 कई ठोस कदम उठाने की बात करती है। इसमें नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग (NIOS) और राज्यों के खुले स्कूलों के जरिए कक्षा 3, 5 और 8 के लिए खुले माध्यम से पढ़ाई की सुविधा देना शामिल है। साथ ही, 10वीं और 12वीं के बराबर के शिक्षा कार्यक्रम, व्यावसायिक कोर्स, वयस्क साक्षरता कार्यक्रम और जीवन संवर्धन कार्यक्रम भी चलाए जाएंगे ताकि हर उम्र का व्यक्ति सीख सके। नीति में ड्रॉपआउट बच्चों को वापस लाने के लिए नवाचारी शिक्षा केंद्र बनाने, उनके सीखने के स्तर पर नजर रखने और स्कूलों में काउंसलर तथा प्रशिक्षित सामाजिक कार्यकर्ताओं को जोड़ने का भी प्रावधान है इस तरह NEP 2020 अनौपचारिक शिक्षा को एक मजबूत और कारगर माध्यम के रूप में स्थापित करती है, ताकि "सबको शिक्षा" का लक्ष्य पूरा किया जा सके और कोई भी बच्चा सीखने के अवसर से वंचित न रहे।

Dr. Safina Kausar
Assistant Professor
Dept. of Home Science, Al- Hafeez College, V.K.S.U., Ara, Bihar
E-Mail-Skausar090@gmail.com